महामत कहे ईमान इस्क की, सुक्र गरीबी सबर।
इन बिध रूहें दोस्ती धनी की, प्यार कर सके त्यों कर।। १२ ।।

अब श्री महामतिजी कहते हैं कि जिन्हें अपने धनी के चरणों को प्राप्त करना हो, वह ईमान और इश्क के लिए गरीबी और नम्रता को जैसे भी धारण कर सके, तैसे करे।

।। प्रकरण ।। १०२ ।। चौपाई ।। १५१५ ।।

राग श्री गौड़ी

जो तूं चाहे प्रतिष्ठा, धराए वैरागी नाम।
साध जाने तोको दुनियां, वह तो साधों करी हराम।। १ ।।

यदि तुम वैरागी बनकर भी मान-मर्यादा की चाहना रखते हो, तो दुनियां वाले तुम्हें साधु जरूर समझेंगे। वह वास्तव में, तुम हो नहीं, क्योंकि साधु लोग मान, प्रतिष्ठा को बुरा समझकर छोड़ देते हैं।

मार प्रतिष्ठा पैजारों, जो आए दगा देत बीच ध्यान।
एही सरूप दज्जाल को, उड़ाए दे इनें पेहेचान।। २ ।।

जो मान-मर्यादा धनी के ध्यान करने में रुकावट डालती है उस प्रतिष्ठा को जूतों से ठुकरा दो। यह प्रतिष्ठा ही दज्जाल का रूप है जो धनी की पहचान नहीं करने देता।

इस दुनियां के बीच में, कोई भला बुरा केहेवत।
तूं जिन देखे तिन को, ले अपनी अर्स खिलवत।। ३ ।।

दुनियां में कोई भला कहे या बुरा, उनकी तरफ मत देखो। तुम श्री राजजी के चरणों में ध्यान लगाओ।

दिल दलगीरी छोड़ दे, होत तेरा नुकसान।
जानत है गोविंद भेड़ा, याको पीठ दिए आसान।। ४ ।।

अपने दिल से संसार की आशा को छोड़ दो। इससे तुम्हारा नुकसान होता है। यह संसार मायावी मण्डल है। इसको सहज ही छोड़ दो। यही उपाय है।

ए भोम देखे जिन फेर के, एही जान महामत।
ढील होत तरफ धाम की, जहां तेरी है निसबत।। ५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं दुबारा इस माया की तरफ तुम मत देखना। परमधाम में जहां तुम्हारी परआतम है, वहां चलने में देरी हो रही है।

।। प्रकरण ।। १०३ ।। चौपाई ।। १५२० ।।

कयामत आई रे साथ जी, कयामत आई।
वेद कतेब पुकारत आगम, जो क्यों न देखो मेरे भाई।। १ ।।

हे सुन्दरसाथजी! दुनियां के कायम होने का वह समय आ गया है जिसके लिए वेद और कतेब भविष्यवाणी कर रहे थे। अब उसका विचार तुम क्यों नहीं करते?

आए स्यामाजीएं मोहे यों कह्या, ए खेल किया तुम कारन।
तुम आए खेल देखने, मैं आई तुमें बुलावन।। २ ।।

श्यामाजी ने आकर मुझे कहा कि यह खेल तुम्हारे वास्ते बनाया है। तुम खेल देखने आए हो। मैं तुम्हें बुलाने आई हूं।